

# रामधारी सिंह 'दिनकर' नवचेतना और राष्ट्रीय जागरण के कवि

रुचि सिंगला\*

सहायक प्रोफेसर, आरकेएसडी शिक्षा महाविद्यालय, कैथल, हरियाणा -136027

सार - रवि सिंह और उनकी पत्नी मान रूप देवी नामक एक किसान किसान के बेटे , रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर, 1908 को सिमरिया, जिला मुंगेर (बिहार) में हुआ था। रामधारी सिंह दिनकर एक देशभक्त कवि के रूप में प्रसिद्ध थे। उनके लेखन पर अंधकार युग के प्रभाव के कारण शृंगार का प्रमाण भी मिलता है। दिनकर जब दो साल के थे , तभी उनके मामूली किसान पिता का देहांत हो गया। इस प्रकार दिनकर और उनके भाई-बहनों का पालन-पोषण उनकी माँ ने किया , जो अब विधवा हो चुकी थीं। दिनकर के युवा और प्रारंभिक वर्ष देश में, कंसास के हिस्सों, बांस के समूहों और हरे भरे खेतों से घिरे हुए थे। इस प्राकृतिक सौन्दर्य से दिनकर का मन प्रभावित हो गया था , लेकिन शायद इसीलिए दैनिक जीवन की कठोरता का अधिक स्थायी प्रभाव पड़ा। इस लेख में श्री रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं की अध्ययन किया गया है।

कीवर्ड - रामधारी सिंह 'दिनकर', राष्ट्रीय जागरण, कवि, नवचेतना

-----X-----

## परिचय

"दिनकर" जी का जन्म 24 सितंबर 1908 को बिहार जिले के बेगूसराय के सिमरिया गांव में हुआ था। पटना विश्वविद्यालय से उन्होंने इतिहास और राजनीति विज्ञान में बीए किया। उन्होंने बंगाली , अंग्रेजी और उर्दू में व्यापक अध्ययन किया है। बी० ए० परीक्षा पास करने के बाद वह एक स्कूल में शिक्षक बन गये। उन्होंने 1934 और 1947 के बीच बिहार सरकार में उप-रजिस्ट्रार और प्रचार विभाग के उप निदेशक के पद पर कार्य किया। लंगट सिंह ने 1950 से 1952 तक कॉलेज मुजफ्फरपुर में हिंदी विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य किया। 1963 से 1965 तक वे भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। उसके बाद , उन्हें भारत सरकार का हिंदी सलाहकार नियुक्त किया गया।

इसके अतिरिक्त , उन्हें पद्म विभूषण सम्मान मिला। उनके काम के लिए संस्कृति के चार अध्याय , उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला , और उर्वशी को भारतीय जानपीठ

पुरस्कार मिला। वह हमेशा अपने शब्दों के माध्यम से जीवित रहेगा।

उनकी प्रबंधन कविता कुरुक्षेत्र, जो महाभारत पर आधारित है, द्वापर काल की एक ऐतिहासिक घटना , अब तक लिखी गई शीर्ष 100 कविताओं में 74 वें स्थान पर थी।

वह 1947 में बिहार विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और हिंदी विभाग के प्रमुख के रूप में मुजफ्फरपुर में स्थानांतरित हो गए , जिस वर्ष राष्ट्र ने स्वतंत्रता प्राप्त की थी। वह 1952 में राज्य सभा के सदस्य चुने जाने के बाद दिल्ली गए , जिस वर्ष भारत की पहली संसद की स्थापना हुई थी। 1964 और 1965 के बीच भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में नामित होने से पहले दिनकर ने 12 वर्षों तक प्रतिनिधि सभा में कार्य किया।<sup>2</sup> हालाँकि , भारत सरकार ने उन्हें 1965 से 1971 तक अपने हिंदी सलाहकार के रूप में नामित किया , और वह अगले वर्ष दिल्ली लौट आए। फिर द्वंद्व गीत , रेणुका, हुंकार, रासवंती और ज्वार उमरा लिखी गई। रेणुका और हुंकार

के कुछ काम इधर-उधर होने लगे, और ब्रिटिश प्रशासकों को यह महसूस करने में देर नहीं लगी कि वे गलत व्यक्ति को अपने सिस्टम में एकीकृत कर रहे हैं। दिनकर की फाइल तैयार होने लगी, और यह निर्णय लिया गया कि चेतावनी और बातचीत आवश्यक होगी। अगर हम मिले होते तो चार साल में, उसे बीस बार स्थानांतरित किया गया।<sup>3</sup>

**“लाखों क्राँच कराह रहे हैं,**

**जाग, आदि कवि की कल्याणी?**

**फूट-फूट तू कवि-कंठों से,**

**बन व्यापक निज युग की वाणी।”**

कविता वह है जो एक पीढ़ी को अपनी आवाज देती है। वह अपने समय में सभी दबे-कुचले समूहों और वर्गों के लिए अलग खड़े थे। स्वस्थ और प्रबुद्ध समाज बनाने में मदद करने के लिए अब समाज में मौजूद आडंबर और पाखंड को हटा दें। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी कविता के माध्यम से और अपने समय के अन्य कवियों के साथ मिलकर जीवन भर ऐसा किया। वह इन वाक्यों में बस अपने विचारों और सोच को व्यक्त करता है। वास्तव में रामधारी सिंह "दिनकर" ऐसे कवि हैं, जो वर्तमान काल में हिन्दी कविता में पुरुषत्व का प्रतिनिधित्व करने वाले और देश की आत्मा के गौरव के रूप में जाने जाते हैं।<sup>4</sup>

अपने स्थायी कार्यों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण और स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले दिनकर समृद्ध भारतीय परंपरा का एक अनमोल उदाहरण हैं। उर्वशी के निर्माता और "कलाम आज उन्ही जय बोल" जैसी प्रेरक कविता के निर्माता रामधारी सिंह दिनकर ने कई साहित्यिक विधाओं में काम किया, लेकिन उनकी अनूठी आवाज कविता में उनके काम के लिए सबसे ज्यादा जानी जाती थी। उन्होंने छायावाद और श्रृंगार रस के प्रभाव में कविता लिखना शुरू कर दिया होगा, लेकिन समय के साथ उनकी कविता स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद के प्यार से जुड़ गई।

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोह में, दिनकर ने अपनी भारतीय नागरिकता को स्वीकार किया और अपने देश के लिए अपने प्यार की घोषणा की। उन्होंने कहा, "जिस तरह मैं बचपन में रवींद्र और इकबाल के बीच झटके लेता रहा, उसी तरह मैं जीवन भर गांधी और मार्क्स के बीच झटके लेता रहा हूँ। इसी वजह से सफेद और लाल रंग के गुणन से

जो रंग निकलता है, वह है मेरी कविता का रंग, और मेरी राय में, यह भारत के भविष्य के व्यक्तित्व का रंग भी होगा।<sup>5</sup>

रामधारी सिंह दिनकर की प्रारंभिक शिक्षा बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया गांव में हुई, जहां उनका जन्म 23 सितंबर, 1908 को हुआ था। रवि सिंह के पिता एक किसान थे। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक दिनकर थे। बचपन से किशोरावस्था में संक्रमण के दौरान दिनकर ने कई उतार-चढ़ाव देखे, अपने स्कूल के वर्षों की शुरुआत में ही कठिनाइयों और समस्याओं से जूझते हुए। दिनकर की कठिनाइयों ने उन्हें अपने विचारों और सोच पर एक गहन दृष्टिकोण दिया। इस माहौल ने उनमें एक प्रमुख व्यक्तित्व विशेषता के रूप में जुझारूता के विकास में योगदान दिया। फिर भी तमाम उतार-चढ़ाव के बावजूद दिनकर की पैनी नजर अपने समय की हर छोटी-बड़ी घटना पर टिकी रही। वह जेगेटिस्ट से अच्छी तरह वाकिफ थे, और उनकी रचनाएँ और कविता अक्सर इसकी विस्फोटक प्रकृति को दर्शाती हैं। परिणामस्वरूप दिनकर इसे चिल्लाते हुए सुना जाता है।

**“सुनूँ क्या सिंधु मैं गर्जन तुम्हारा, स्वयं युग-धर्म का  
हुंकार हूँ मैं”**

**कठिन निर्घोष हूँ भीषण अशनि का, प्रलय गांडीव का  
टंकार हूँ मैं।”<sup>6</sup>**

दिनकर जीवन भर जन जागरूकता के लिए इसी गर्जना के साथ लिखते रहे। उन्होंने हिन्दी साहित्य के शरीर में जोड़ने के लिए विभिन्न विधाओं में काम करने का प्रयास जारी रखा, लेकिन उन्होंने क्रांति जागरूकता के अग्रदूत बनकर अपनी कविता के माध्यम से राष्ट्रीय प्रेम को प्रज्वलित करना जारी रखा। वास्तव में, दिनकर की कविताएँ भारतेंदु से शुरू हुई राष्ट्रीय कविता परंपरा का शिखर थीं। यदि भूषण जैसे वीर रस का कवि लिख रहा होता, तो उनकी रचनाओं में कोई न कोई राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त, जो लिखता और रोता रोता था, उसकी रचनाओं में बैठा होता।

यदि दिनकर के कार्यों में सुख शामिल है, तो उनमें दुख भी है। सुख है तो दुख भी होना चाहिए। निराशा होने पर भी आशा है। व्यवस्था के खिलाफ नफरत होने पर भी एक नए दिन के लिए आशावाद है। निराशा है तो उससे गुजरने की ताकत भी है। दिनकर एक राष्ट्रीय कवि हैं

क्योंकि वे अपने कार्यों के शीर्ष पर देशभक्ति और राष्ट्रवाद को बनाए रखते हैं, इतिहास को कवर करते हैं, वर्तमान को उसी तरह चित्रित करते हैं, और भविष्य के मार्ग को इंगित करते हैं।

दिनकर जबरदस्त संवेदनशीलता, कोमलता, प्रेम और सुंदरता के कवि होने के साथ-साथ अपार शक्ति, साहस, वीरता और राष्ट्रवाद के कवि भी हैं। दिनकर ने अपनी पेंटिंग्स में तरह-तरह की भावनाओं को उकेरा है। यह प्रणभंग से हरे और फिर हरिनम तक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

दरअसल दिनकर की काव्य लेखन उस युग से आरम्भ होती है जब गोरी सरकार के अत्याचारों के प्रतिरोध में देश का हर नौजवान सीना तान कर खड़ा था। ये वो समय था जब देश का छितिज नवयुवकों की छाती से निकलते हुए खून से लाल हो रहा था। कोड़े खाते हुए निर्दोष जनता के मुँह से निकलती हुई वन्दे मातरम् की हर आवाज़ एक नई आगाज़ का संदेश दे रही थी और फाँसी पर झूलते हुए निर्भिक चेहरे भविष्य के पट पर लिखे हुए इतिहास की आहट सुना रहे थे।

दिनकर ने उस दौर में इतिहास की इन घटनाओं को कसौटी पर कसते हुए लिखा-

“जब भी अतीत में जाता हूँ,

मुर्दों को नहीं जिलाता हूँ।

पीछे हटकर फेंकता बाण,

जिससे कम्पित हो वर्तमान”<sup>7</sup>

दिनकर ने वास्तव में उस परिवेश में अंग्रेजों के उत्पीड़न का अनुभव किया था जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ था और उन्होंने इसे ध्यान से देखा था, इसलिए उनके खिलाफ उनकी जबरदस्त दुश्मनी थी। साहित्य और इतिहास के अपने ज्ञान से उन्हें सामंतवाद और उपनिवेशवाद के तानाशाही संघ के साथ-साथ समाज पर इसके हानिकारक परिणामों का विरोध करने के लिए मजबूर होना पड़ा। ऐसे में राष्ट्रीय पहचान की प्रबल भावना वाले कवि की शकल उनके उग्र विचारों में उभरी तो उस समय के वातावरण और पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण योगदान था।

दिनकर के व्यक्तित्व के विकास पर पर्यावरण और परिस्थितियों दोनों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। दिनकर के दिमाग और व्यक्तित्व पर रामचरितमानस का गहरा प्रभाव

पड़ा, जिसे अक्सर घर पर सुनाया जाता था, और उनके प्रारंभिक वर्षों के दौरान मैथिलीशरण गुप्ता और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे राष्ट्रीय कवियों की रचनाएँ। इसके अतिरिक्त, आधुनिक विश्व की चल रही स्वतंत्रता संग्राम, गांधीजी के विचार, लेनिन की वीरता, भगत सिंह और गणेश शंकर विद्यार्थी की शहादत, स्वामी सहजानंद सरस्वती का किसान आंदोलन, विवेकानंद, राजा राममोहन राय और दयानंद सरस्वती सभी उल्लेखनीय हैं। दो विश्व युद्धों के अत्याचारों के परिणामस्वरूप दिनकर की सोच और अभिव्यक्ति ने भी एक नई दिशा ली।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ज्यादातर कवि गांधी और मार्क्स के विचारों के द्वन्द्व में झूल रहे थे। दिनकर भी इससे अछूते नहीं थे। एक और गांधी जी की अहिंसक नीति और सत्याग्रह तो दूसरी ओर चन्द्रशेखर आजाद और भगत सिंह के क्रांति कार्य थे। ऐसे में जब अहिंसक सत्याग्रह की राजनीति से युवाओं की आस्था हिलने लगी थी तब दिनकर ने अपनी इस मनःस्थिति को हिमालय कविता में कुछ इस ढंग से प्रस्तुत किया।

“रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,

जाने दे उनको स्वर्ग धीर,

पर, फिरा हमें गाण्डीव गदा,

लौटा दे अर्जुन भीम वीर” 18

हिमालय से दिनकर की जो उपनिवेशवाद विरोधी उग्र राष्ट्रीय काव्य धारा चली, उसकी परिणति हुंकार, कुरुक्षेत्र और परशुराम की प्रतिक्रिया में देखने को मिली।

राष्ट्रीयता की यह भावना समय और हालात के साथ उनकी लेखनी में और उग्र होती चली गई। अंग्रेजों के जुल्म और युद्ध की परिणति ने दिनकर को विचलित कर दिया था। उन्होंने युद्ध के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह खड़ा करते हुए ‘कुरुक्षेत्र’ जैसा ग्रन्थ लिखा। कुरुक्षेत्र में तो दिनकर ने जैसे अपनी आत्म संघर्ष की पूर्ण परिणति ही कर दी। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध की विभिषिका देखी थी। उनके सामने महात्मा गांधी का सत्य और अहिंसा पर आधारित स्वाधीनता आंदोलन था, जिससे प्रभावित होकर उनमें एक वैचारिक द्वंद्व उठ खड़ा हुआ कि अत्याचार और अन्याय का विरोध अहिंसा के जरिए करना ठीक है या कृष्ण द्वारा हिंसामूलक युद्ध की नीति उचित

है। जैसे मैं दिनकर युद्ध के औचित्य पर सवाल खड़ा करते हुए कहते हैं...

“शांति नहीं तब तक, जब तक,

सुख-भाग न नर का सम हो।

नहीं किसी को बहुत अधिक हो,

नहीं किसी को कम हो।”9

कुरुक्षेत्र को अपने समय का आक्रोश का काव्य भी कहा गया है। कुरुक्षेत्र के प्रकाशन के साथ ही दिनकर उत्तर छायावाद काल के सबसे बड़े कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो गए।

दिनकर, जितने कठोर उपनिवेशवाद को लेकर थे उतने ही संवेदनशील मानवता को लेकर भी थे। उन्नीस सौ सैंतालीस में भारत के विभाजन को लेकर दिनकर ने जैसे देश की आत्मा का पूरा दर्द इन शब्दों में ढाल दिया है-

“हाथ की जिसकी कड़ी टूटी नहीं,

पाँव में जिसके अभी जंजीर है।

बाँटने को हाथ तौली जा रही,

बेहया उस कौम की तकदीर है”।

वहीं, दूसरी ओर दिनकर ने आज़ादी को नया सूर्योदय भी कहा और इसका पूरा श्रेय भारत की जनता को दिया। दिनकर ने स्वतंत्रता का अपने निराले अंदाज़ में स्वागत किया और पहले गणतंत्र दिवस के अवसर पर उनकी लिखी कविता बाद में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 1974 के संपूर्ण क्रांति की नारा बनी।

“सदियों की ठंडी-बुझी राख सुगबुगा उठी,

मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है।

दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है”।

दिनकर की कविताओं में अगर विद्रोह है, विस्फोट है, तो जीवन की निर्बाध गति भी है। दिनकर की कला में स्वप्नों का सौन्दर्य नहीं है, उसमें जीवन के संघर्षों का सौन्दर्य है।

‘विपथगा’ कविता में दिनकर समाज में व्याप्त विषमता और व्यवस्था के प्रति बगावती तेवर अपना लेते हैं।

“श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र, बच्चे भूखे अकुलाते हैं,

माँ की हड्डी से चिपक, ठिठुर जाइँ की रात बिताते है

युवती के लज्जा वसन बेच जब ब्याज चुकाए जाते हैं,

मालिक जब तेल-फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते हैं,

पापी महलों का अहंकार देता मुझको तब आमंत्रण।”

दिनकर ने अपने साहित्य के जरिए न केवल रूढ़ियों का पुरजोर विरोध किया बल्कि दलितों, शोषितों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ जमकर आवाज़ भी उठाई। जाति व्यवस्था को केंद्र में रखकर दिनकर ने अपना सबसे लोकप्रिय प्रबंध काव्य ‘रश्मिरथी’ लिखी। रश्मिरथी में दिनकर ने कर्ण के जरिए जाति व्यवस्था से उत्पन्न अनेक विसंगतियों और सामाजिक कुरीतियों पर प्रश्न खड़े किए हैं। दिनकर की रश्मिरथी उनकी वाणी की उस शक्ति का प्रतीक है जिसने हर तरह की विषमता का खुलकर मुकाबला किया।

“ऊँच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,

दया धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।

क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,

सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग।”

परिस्थितियों के दबाव में कभी-कभी दिनकर आक्रान्त भी हो जाते थे। 1962 में भारत पर हुए चीनी आक्रमण ने उनके अन्तर्मन को झकझोर दिया। इस हमला ने अहिंसा और गांधीवाद के प्रति दिनकर की आस्था को जड़ से हिला दिया। सारा देश छुब्ध और आवेशित था। दिनकर का पौरुष एक बार फिर हुंकार उठा। वो ‘परशुराम की प्रतीक्षा’ के माध्यम से राष्ट्र के आहत स्वाभिमान के प्रतीक बनकर फूट पड़े।

“गरजो, अम्बर को भरो रणोच्चारों से,

क्रोधान्ध रोर, हाँकों से, हुंकारों से।

यह आग मात्र सीमा की नहीं लपट है,

**मूढो ! स्वतंत्रता पर ही यह संकट है।**

बहुआयामी प्रतिभा के धनी दिनकर की कविता भी बहुरंगी है। वे केवल ओज, शौर्य और सहजता के कवि ही नहीं हैं। वे प्रेम, सौंदर्य और गीतात्मकता के कवि भी हैं। वस्तुतः दिनकर राष्ट्रीयता और श्रृंगार को लेकर शुरू से ही दुविधाग्रस्त रहे। उनका चेतन मन जहाँ परिस्थितियों के दबावों से ग्रस्त रहा वहीं उनका अवचेतन प्रेम सौन्दर्य के सरोवर में आकंठ डूबा रहा। वे प्रणव के सरोवर में केवल डूबते और उतराते ही नहीं रहे, बल्कि प्रेम और सौन्दर्य के सत्य को जान लेने के लिए भी लगातार प्रयासरत रहे। उनके अनेक कविताओं में रूमनियत और सौन्दर्य की ये प्रवृत्ति दिखाई देती है।

रसवन्ती, मानवती से शुरू हुई दिनकर की सौन्दर्य कविता 'उर्वशी' में अपने चरम पर पहुँच गई। उर्वशी में दिनकर का एक नया रूप दिखा। दरअसल उर्वशी दिनकर की रूमानी संवेदना की चरम पराकाष्ठा है।

भारतीय ज्ञानपीठ से सम्मानित इस रचना में काम जैसे मनोभाव को स्वीकार करने और उसे आध्यात्मिक गरिमा तक पहुँचाने के लिए जिस साहस की जरूरत थी वो दिनकर में मौजूद था। उर्वशी में अर्धनारीश्वर का अर्थ समझाते हुए कहते हैं- जिस पुरुष में नारीत्व नहीं वह अधूरा है, और जिस नारी में पुरुषत्व नहीं वह भी अपूर्ण है। दरअसल दिनकर में पौरुष की हुंकार थी तो स्त्री का प्रेम भी। तभी तो दिनकर उर्वशी में कहते हैं।

**“मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं,**

**उर्वशी ! अपने समय का सूर्य हूँ मैं।**

**अंध तम के भाल पर पावक जलाता हूँ,**

**बादलों के सीस पर स्यंदन चलाता हूँ।”**

इसमें कोई शक नहीं कि उर्वशी प्रेम की अतीन्द्रियता की कविता है। वह आत्मा के तल पर पहुँच कर निस्पंद हो जाने वाले काम की कविता है। वह जीवन के उदात्त क्षणों के अनुभूति की अभिव्यक्ति है।

दिनकर के व्यक्तित्व के एक नहीं अनेक रूप थे। इसी के अनुरूप उन्होंने अपनी रचनाओं के साथ ही सार्वजनिक जीवन में प्रगतिशील और आधुनिक समाजवादी चिंतन को पर्याप्त महत्व दिया। गांधी जी के व्यक्तित्व ने उनके चिंतन को एक

खास दिशा दी, तो नेहरू के सामासिक संस्कृति के दर्शन ने दिनकर के राष्ट्रीय चिंतन को बहुत दूर तक प्रभावित किया। दिनकर की संस्कृति के चार अध्याय इस चिंतन की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति थी। संस्कृति के चार अध्याय ने उन्हें गद्य लेखक के रूप में बौद्धिक समाज में पूरी प्रतिष्ठा के साथ स्थापित कर दिया।

‘संस्कृति के चार अध्याय’ उनकी गहन गवेषणा, सूक्ष्म अन्वेषण, भारतीय संस्कृति से उद्गम प्रेम का विशिष्ट उपाहार तो है ही, उनकी विलक्षण क्षमताओं का अत्यंत सजीव प्रमाण भी है।

समय और परिस्थितियों से दिनकर भी अछूते नहीं रहे। यही वजह रही कि समय के साथ-साथ उनकी कविता भी बदलती रही। स्वतंत्रता से पहले दिनकर आज़ादी के लिए अलख जाते रहे, तो स्वतंत्रता के बाद आम जनता की आवाज़ बन गए। आज़ादी से पहले भी भारत की जनता दिनकर के दिल पर राज करती थी और आज़ादी के बाद भी करती रही। तभी तो जिस दिनकर की वीर रस में डूबी कविताओं के बगावती तेवर देखकर अंगरेज़ भी घबराते थे, वही दिनकर आज़ादी के बाद देश की आवाज़ बन गए और फिर देश के राष्ट्रकवि।

दिनकर 1952 से 1963 तक राज्यसभा के सांसद रहे और दिल्ली का सच देखते रहे। दिल्ली की विलासपूर्ण जीवन और गाँवों की बदहाली पर उन्होंने 1954 में 'भारत का यह रेशमी नगर' कविता लिखा।

**“दिल्ली फूलों में बसी, ओस-कण से भीगी, दिल्ली सुहाग  
है, सुषमा है, रंगिनी है,**

**प्रेमिका-कंठ में पड़ी मालती की माला, दिल्ली सपनों की  
सेज मधुर रस-भीनी है।”**

दिनकर ने कभी भी अपने साहित्य के आदर्शों को लेकर समझौता नहीं किया। उन्होंने भ्रष्टाचार में डूबे देश के कटु सच को बिना किसी डर-भय के कहने में कभी कोताही नहीं बरती-

**“टोपी कहती है, मैं थैली बन सकती हूँ,**

**कुरता कहता है मुझे बोरिया ही कर लो।**

**ईमान बचाकर कहता है, आँखें सबकी**

बिकने को हूँ तैयार खुशी से जो दे दो।“

इतना ही नहीं वे देश और जनता की सुख-दुख से अंजान बने नेताओं और बुद्धिजीवियों को भी आगाह करने से नहीं चुकते।

“समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,

जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध।“

दरअसल दिनकर का मुख्य सरोकार जनता के लिए था , उनके दुःख दर्द लिखने, उनकी पीड़ा कहने से था। जनता की दुख और बदहाली उन्हें हर हाल में उद्वेलित करते रहे। आजादी से पहले भी और आजादी के बाद भी। आजादी के बाद भी जब किसानों की स्थिति में कोई बदलाव नहीं दिखा तो दिनकर कह उठे-

“जेठ हो कि पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है,

छूटे कभी संग बैलों का ऐसा कोई याम नहीं है।

मुख में जीभ शक्ति भुजा में जीवन में सुख का नाम नहीं है,

वसन कहाँ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है।“<sup>10</sup>

हिंदी साहित्य के इतिहास में ऐसे लेखक बहुत कम हुए हैं जो सत्ता के भी करीब रहे हों और जनता में भी उसी तरह लोकप्रिय हों। जो जनकवि भी हों और साथ ही राष्ट्रकवि भी। दिनकर का व्यक्तित्व इन विरोधों को अपने भीतर बहुत सहजता से साधता हुआ चला था।

यही वजह थी कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जीवन भर करोड़ों लोगों की आवाज बनकर देश में गूँजते रहे।

जीवन भर राष्ट्र प्रेम का अलख जगाने वाले राष्ट्रकवि दिनकर 24 अप्रैल 1974 को इस दुनिया से चले गए। दिनकर के चले जाने से वह कंठ मौन हो गया, जिसने अपने गर्व भरे स्वरो में घोषित किया था-

“सुनूँ क्या सिंधु में गर्जन तुम्हारा,

स्वयं युग धर्म का हुंकार हूँ मैं।“

**उपसंहार**

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर मर कर भी अमर हैं और इसकी गवाह है उनकी रचनाएँ , जो जन-जन की जुबान पर

हैं। उनकी रचनाएं कल भी प्रासंगिक थीं , आज भी हैं और आगे भी रहेंगी।

**संदर्भ**

1. कवि दिनकर व्यक्तित्व और कृतित्व श्रीमती एस के पदमावती , कुंज बिहारी लाल पचौरी , जवाहर पुस्तकालय, असकुण्डा बाजार , मथुरा, 1996
2. रेणुका दिनकर उदयाचल, राजेन्द्र नगरख पटना 16 , 1986
3. हुंकार दिनकर श्री अजन्ता प्रेस लिमिटेड पटना 4 सन 1955
4. बापू दिनकर उदयाचल , आर्य कुमार रोड , पटना 4 दो शब्द सन 1947
5. रसवन्ती दिनकर उदयांचल , आर्य कुमार रोड , पटना सन 1947
6. नीलकुसुम दिनकर उदयाचल , आर्य कुमार रोड , पटना तृतीय सन 1990
7. परशुराम की प्रतीक्षा दिनकर उदयाचल , राजेन्द्र नगर, पटना, 1966
8. इतिहास के आँसू दिनकर उदयाचल , आर्य कुमार रोड, पटना, सन 1957
9. धूप और धुआ दिनकर श्री अजन्ता प्रेस लि ., नया टोला पटना, सन 1951
10. दिल्ली दिनकर चक्रवाल प्रकाशन , कुल्हडिया हाउस, अशोक राजपथख पटना सन 1965

**Corresponding Author**

**रुचि सिंगला\***

सहायक प्रोफेसर, आरकेएसडी शिक्षा महाविद्यालय, कैथल, हरियाणा -136027

**ईमेल-** SINGLARUCHI009@GMAIL.COM